भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

खण्ड–XXVIII अंक–23 15 दिसम्बर 2023

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग–युग में प्रकट हुआ करता हूँ। **श्रीमद्भगवद्गीता 4/8**

बधाई (चयन/पदोन्नति)

स्थापना अनुभाग–1 से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार निम्नलिखित संकाय सदस्यों को उनके नाम के आगे दिए गए पद के लिए चयनित/पदोन्नत किया गया है–

संकाय सदस्य का नाम	पिछला पदनाम	नया पदनाम	विभाग/केन्द्र	वेतनमान
प्रो. संदीप कुमार झा	सह प्रोफेसर प्रोफेसर	प्रोफेसर	जैव–चिकित्सा इंजीनियरी	₹ 1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)
प्रो. (सुश्री) नीतू सिंह	सह प्रोफेसर प्रोफेसर	प्रोफेसर	जैव–चिकित्सा इंजीनियरी	₹ 1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)
प्रो. समरेश दास	सह प्रोफेसर प्रोफेसर	प्रोफेसर	अनुप्रयुक्त इलेक्ट्रॉनिकी अनुसंधान	₹ 1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)
प्रो. दिवाकर रक्षित	सह प्रोफेसर प्रोफेसर	प्रोफेसर	ऊर्जा विज्ञान एवं इंजीनियिरी	₹ 1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)
प्रो. प्रवीण पोपिनन्द इंगोले	सह प्रोफेसर प्रोफेसर	प्रोफेसर	रसायन विज्ञान	₹ 1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)
प्रो. गौरव गोयल	सह प्रोफेसर प्रोफेसर	प्रोफेसर	रासायनिक इंजीनियिरी	₹ 1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)
प्रो. शिवानाथन सम्पथ	सह प्रोफेसर प्रोफेसर	प्रोफेसर	गणित	₹ 1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)

	प्रो. (सुश्री) स्मिता काशीरामका	सह प्रोफेसर प्रोफेसर	प्रोफेसर	प्रबंध अध्ययन	₹ 1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)
	प्रो. पुनीत शर्मा	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	गणित	₹ 1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)
	प्रो. (सुश्री) अपराजिता दासगुप्ता	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	गणित	₹ 1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)
	प्रो. अमित प्रियदर्शी	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	गणित	₹ 1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)
	प्रो. विप्लब बसाक	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	गणित	₹ 1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)
	प्रो. साहिल बंसल	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	सिविल इंजीनियरी	₹ 1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)
	प्रो. जयंत भट्टाचार्या	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	जैव–चिकित्सा इंजीनियरी	₹ 1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)
	प्रो. अगम गुप्ता	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	प्रबंध अध्ययन	₹ 1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2023/219764 दिनांक 05.12.2023 के अनुसार **प्रो. सौरभ सक्सेना** ने 31.10.2023 से संस्थान के आटोमोटिव अनुसंधान एवं ट्राइबोलोजी केन्द्र (CART) में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर (ग्रेड-II) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. सौरभ सक्सेना को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2023/218323 दिनांक 30.11.2023 के अनुसार **प्रो. (सुश्री) सविता वेंकटचारी** ने 24.11.2023 से संस्थान के सिविल इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर (ग्रेड-II) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. (सुश्री) सविता वेंकटचारी को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2023/219179 दिनांक 04.12.2023 के अनुसार **प्रो. (सुश्री) ऐना फ्रांसिस** ने 28.11.2023 से संस्थान के सिविल इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–10 में सहायक प्रोफेसर (ग्रेड-II) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. (सुश्री) ऐना फ्रांसिस को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि

अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित "युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप" भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/2023/221552 दिनांक 08.12.2023 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) साजिया सलाम** ने 07.12.2023 से संस्थान के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में अंग्रेजी भाषा अनुदेशक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/2023/218541 दिनांक 30.11.2023 के अनुसार **डॉ. शुभादीप अट्टा** ने 22.11.2023 से संस्थान के विद्युत इंजीनियरी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2023/219095 दिनांक 05.12.2023 के अनुसार **डॉ. अभिमन्यु** ने 04.12.2023 से संस्थान के सिविल इंजीनियरी विभाग में में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/2023/221328 दिनांक 08.12.2023 के अनुसार **डॉ. सलाम माइकल सिंह** ने 01.12.2023 से संस्थान के विद्युत इंजीनियरी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

सह संकायाध्यक्ष, अवसंरचना–2 की नियुक्ति

कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त अधिसूचना संख्याः आई.आई.टी.डी./ए.आर.ई.जी./4(3)2023/211465 दिनांक 08.12.2023 के अनुसार निदेशक महोदय द्वारा प्रो. हर्ष कोटा, सिविल इंजीनियरी विभाग को 11 दिसम्बर, 2023 से 10 दिसम्बर 2025 तक के लिए सह संकायाध्यक्ष, अवसंरचना–2 के रूप में नियुक्त किया गया है।

अध्यक्ष, जैव–चिकित्सा इंजीनियरी केन्द्र की नियुक्ति एवं संकायाध्यक्ष, अल्युमनी के कार्यकाल में विस्तार

1. कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त अधिसूचना संख्याः आई.आई.टी.डी./ए.आर.ई.जी./4(3)2023/218042 दिनांक 29.11.2023 के अनुसार निदेशक महोदय द्वारा प्रो. पी.वी.एम. राव, संकायाध्यक्ष, अल्युमनी संबंध के कार्यकाल को एक वर्ष अर्थात 14.12.2023 तक के लिए बढ़ा दिया गया है।
2. प्रो. (सुश्री) नीतू सिंह को 01.12.2023 से दो वर्ष के लिए जैव चिकित्सा इंजीनियरी केन्द्र के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया है।

चित्त की एकाग्रता

हमारा निजी व्यवहार हो या परमार्थ का कार्य बिना चित्त की एकाग्रता के सफलता मिलना बहुत कठिन है। यदि चित्त एकाग्र रहे रहेगा, तो फिर सामर्थ्य की कमी कमी नहीं पड़ेगीं

आचार्य विनोवा भावे का चिंतन....।

ध्यान योग में तीन बाते मुख्य हैं–चित्त की एकाग्रता, जीवन की परिमितता और सम–दृष्टि। इन सब बातों के बिना सच्ची साधना नहीं हो सकती। चित्त की एकाग्रता का अर्थ है चित्त की चंचलता पर अंकुश रखना। जीवन की परिमितता का अर्थ है, 'सब क्रियाओं का नपा–तुला होना। सम–दृष्टि का अर्थ है, विश्व की ओर देखने की उदार दृष्टि। सबसे महत्वपूर्ण है चित्त की एकाग्रता। किसी भी काम में यह आवश्यक है। व्यावहारिक बातों में भी चित्त की एकाग्रता चाहिए। यह बात नहीं कि व्यवहार में अलग गुणों की जरूरत है और परमार्थ में अलग। व्यवहार को शुद्ध करने का ही अर्थ है परमार्थ। कैसा भी व्यवहार हो, उसकी सफलता और असफलता आपकी एकाग्रता पर अवलंबित है। व्यापार, व्यवहार, शास्त्र–शोधन, राजनीति, कूटनीति किसी को भी लीजिए, इनमें जो कुछ सफलता मिलेगी, वह चित्त की एकाग्रता के अनुसार मिलेगी। नेपोलियन के बारे में कहा जाता है कि जहां वह युद्ध की व्यवस्था को एक बार ठीक कर लेता था, उसके बाद समर–भूमि में गणित के सिद्धांतों को हल किया करता। डेरों–तंबुओं पर गोले बरसते, सैनिक मरते, परंतु नेपोलियन का चित्त अपने गणित में ही मग्न रहता। मैं यह नहीं कहता कि नेपोलियन की एकाग्रता बहुत बड़ी थी। उससे भी ऊंचे दर्जे की एकाग्रता के उदाहरण दिए जा सकते हैं। खलीफा उमर की भी ऐसी ही बात कही जाती है। बीच लड़ाई में जब नमाज का वक्त हो जाता, तो वे वहीं समर–भूमि में चित्त एकाग्र करके घुटने टेककर नमाज पढ़ने लगते थे और उनका चित्त इतना एकाग्र हो जाता था कि उन्हें यह होश भी न रहता कि किसके आदमी मर रहे हैं।

एक फकीर था। उसके शरीर में तीर घुस गया। इससे उसे बड़ी वेदना हो रही थी। लोग तीर खींचने की कोशिश करते, तो हाथ लगाते ही वेदना और बढ़ जाती थी। वह तीर निकालना बड़ा मुश्किल हो गया। आज की तरह क्लोरोफार्म जैसी बेहोश करने की दवा भी नहीं थी। बड़ी समस्या खड़ी हो गई। कुछ लोग उस फकीर को जानते थे। वे आगे आकर बोले तीर अभी मत निकालो। यह फकीर नमाज पढ़ने बैठेगा, तब निकाल लेंगे। ऐसा ही हुआ। नमाज के वक्त फकीर का चित्त इतना एकाग्र हो गया कि तीर निकाल लिया गया और उसे पता भी न चला। इसे कहते हैं एकाग्रता।

व्यवहार हो या परमार्थ, चित्त की एकाग्रता के बना सफलता मिलना कठिन है। यदि चित्त एकाग्र रहेगा, तो फिर सामर्थय की कभी कमी न पड़ेगी। साठ वर्ष के बूढ़े होने पर भी किसी नौजवान की तरह आपसे उत्साह और सामर्थ्य दिखाई पड़ेगा। होना यह चाहिए कि मनुष्य ज्यों–ज्यो बुढ़ापे की ओर बढ़े, त्यों–त्यों उसका मन अधिक मजबूत होता जाना चाहिए। फल को ही देखिए। पहले वह हरा होता है, फिर पकता है, फिर सड़ता है, गलता है और मिट जाता है, परंतु उसका भीतर का बीज उत्तरोत्तर बड़ा होता जाता है। यह बाहरी शरीर सड़ जाएगा, गिर जाएगा, परंतु बाहरी शरीर फल का सार–सर्वस्व नहीं है। उसका सार–सर्वस्व, उसकी आत्मा तो बीज है। यही बात शरीर की है। शरीर भले ही बूढ़ा होता चला जाए, परंतु स्मरण–शक्ति तो बढ़ती ही रहनी चाहिए। परंतु ऐसा होता नहीं। उम्र बढ़ने से स्मरण–शक्ति कम होती जाती है। तुम्हारा जो ज्ञान, विद्या या स्मृति है, वह तुम्हारा बीज है। शरीर बूढ़ा होने से ज्यों–ज्यों ढीला पड़ता जाए, त्यों–त्यों आत्मा बलवान होती जानी चाहिए। इसके लिए एकाग्रता ही आवश्यक है।

एकाग्रता तो चाहिए, लेकिन वह कैसे हो? उसके लिए क्या करना चाहिए ? गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं, आत्मा में मन को स्थिर करके यह संभव है। न किंचिदपि चिंतयेत–दूसरा कुछ भी चिंतन न करें। परंतु यह सधे कैसे ? मन को बिल्कुल शांत करना बड़े महत्व की बात है। विचारों के चक्र को रोके बिना एकाग्रता होगी कैसे? बाहरी चक्र तो किसी तरह रोक भी लिया जाए, परंतु भीतरी चक्र तो चलता ही रहता है। चित्त की एकाग्रता के लिए ये बाहरी साधन जैसे–जैसे काम में लाते हैं, वैसे–वैसे भीतर का चक्र अधिक वेग से चलने लगता है। आप आसन जमाकर तनकर बैठ जाइए, आंखे स्थिर कर लीजिए। परंतु इतने से मन एकाग्र नहीं हो पाता। मुख्य बात यह है कि मन के चक्र को चलने से बंद करना ही साधना है।

बाहर का यह अपरंपार संसार, जो हमारे मन में भरा रहता है, उसको बंद किए बिना एकाग्रता साधना कठिन है। अपनी आत्मा की अपार ज्ञान–शक्ति हम बाह्य क्षुद्र वस्तुओं में खर्च कर डालते हैं, लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए। जिस तरह दूसरे को न लूटते हुए स्वयं अपने प्रयत्न से धनी बनने वाला व्यक्ति आवश्यकता के बिना खर्च नहीं करता, उसी तरह हमे भी अपनी आत्मा की ज्ञान शक्ति क्षुद्र बातों के चिंतन में खर्च नहीं करनी चाहिए। यह ज्ञान–शक्ति हमारी अमूल्य थाती है, परंतु हम उसे स्थूल विषयों में खर्च कर डालते हैं। यह साग अच्छा नही बना, इसमें नमक, कम पड़ा ? तनिक–सा कम पड़ा। इस 'महान' विचार में ही हमारा सारा ज्ञान खर्च हो जाता है। जो ज्ञान परमेश्वर की प्राप्ति करा सकता है, उसे हम साग–सब्जी के जायके की चर्चा में खो देते हैं।

गीता में श्रीकृष्ण ने चित्त की एकाग्रता के लिए इस तरह बैठो, इस तरह आंखे रखो, इस तरह आसन जमाओ आदि सूचनाएं नहीं दीं, ऐसी बात नहीं। परंतु इन सबसे लाभ तो तभी होगा, जब पहले चित्त की एकाग्रता के लिए हम गंभीर हो।

मनुष्य के चित्त में पहले यह जम जाए कि चित्त की एकाग्रता आवश्यक है, फिर तो मनुष्य खुद ही उसकी साधना और मार्ग ढूंढ़ निकालेगा।

साभार–दैनिक जागरण
दिनांक 1.5.2013

वाणी का संयम

वाग्देवी सरस्वती की पूजा का अभिप्राय यह है कि हम अपनी वाणी पर संयम रखें, उनके हंस की तरह नीर–क्षीर विवेकी बने और ज्ञान में पारंगत हों।

डॉ. अतुल टंडन का आलेख.....

माघ मास के शुक्लपक्ष की पंचमी (वसंत पंचमी) को वाग्देवी सरस्वती का आविर्भाव–दिवस माना गया है। अतः यह तिथि 'वागीश्वरी जयंती' के रूप में जानी जाती है। इसी कारण वसंत पंचमी सरस्वती पूजा का पावन पर्व बन गई है। शास्त्रों में सरस्वती देवी की इस वार्षिक महापूजा के साथ बच्चों के विद्यारंभ के दिन भी सरस्वती पूजन का विधान बनाया गया है। माघस्य शुक्लपंचम्याम् विद्यारम्भदिनेपि च। सरस्वती देवी का वाहन हंस है। जो नीर–क्षीर विवेक का प्रतीक है। सरस्वती माता का वास जिह्वा, लेखनी और पुस्तक में माना गया है। वसंत–पंचमी के दिन लेखिनी–पूजा का तात्पर्य भी यही है।

वाग्देवी सरस्वती का वास जिह्वा पर होने के कारण हमें वाणी के संयम पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। हम सदा सत्य बोलें। असत्य (झूठ) कदापि न बोलें। वाणी में कटुता न आने दें। सदैव मधुर वचन बोलें। वाक्शक्ति का संचय करें और व्यर्थ की बकवास में इसे बर्बाद न करें। पवित्र जिह्वा भगवती सरस्वती का आसन है, अतः इसे सदा पवित्र रखें। इस पर असत्य, कटुता और प्रलाप की मलिनता न आने दें। सही मायनों में वाणी का संयम ही वाग्देवी सरस्वती की सच्ची पूजा है।

"हमें सर्वदा सोच–समझ कर बोलना चाहिए। क्योंकि मुख से निकले वचन वे तीर हैं, जो एक बार निकल जाने पर वापस नहीं हो पाते...."

हमारी सनातन संस्कृति की मान्यता है कि भगवती सरस्वती विद्या, बुद्धि, ज्ञान और वाणी की अधिष्ठत्री देवी हैं। शास्त्रों में इन्हें भारती, ब्राह्मी, भाषा, शारदा, वाग्देवी आदि विभिन्न नामों से भी संबोधित किया गया है और कहा गया है कि वे उपासकों के लिए निरंतर पचास अक्षरों के रूप में ज्ञानामृत की धारा प्रवाहित करती हैं। अतएव ज्ञानात्मिका शक्ति भगवती सरस्वती ब्रह्मास्वरूपिणी हैं

ऋग्वेद के 10–125 सूक्त की आठवीं ऋचा के अनुसार, वाग्देवी (सरस्वी) सौम्य गुणों (सदगुणों) की दात्री तथा वसु–रूद्र–आदित्य आदि सभी देवों की रक्षिका हैं। वे राष्ट्रीयता की भावना जगाती हैं तथा लोकहित में संघर्ष करने की प्रेरणा देती हैं ये अज्ञान के अंधकार को अपने ज्ञानरूपी प्रकाश से नष्ट कर देती हैं इनके अनुग्रह से मुनष्य ज्ञानी, विज्ञानी, मेघावी, विद्वान और महर्षि हो जाता है। प्राणी अविद्या के पाश से मुक्त होकर विद्यावान बन जाता है।

ऋग्वेद में सरस्वती क्रमशः पवित्र नदीं, देवता, वाग्देवता आदि के रूप में वर्णित हुई है। कई सूक्तों में सरस्वती को भारती कहा गया। परवर्तीकाल के ग्रंथों में उन्हें विद्या और कला की अधिष्ठात्री देवी के रूप में देखा गया है। श्रीमद्देवीभागवत एवं मार्कण्डेय पुराण के अंतर्गत दुर्गासप्तशती में आद्याशक्ति द्वारा अपने आपको तीन भागों में विभक्त करने का वृत्तांत मिलता है। आद्याशक्ति के ये तीनों रूप महाकली, महालक्ष्मी, महासरस्वती के नाम से लोकविख्यात हैं। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार, परमेश्वर श्रीकृष्ण के श्रीमुख से सरस्वती का अविर्भाव हुआ।

अविर्भाव तत्पश्चान्मुखतः परमात्मन।
वाग्धिष्ठा देवी सा कवीनामिष्ठ देवत।।

अर्थात परमात्मा (श्रीकृष्ण) के मुख से गौरवर्ण की, वीणा पुस्तक धारण किए हुए एक देवी प्रकट हुई जो वाग्देवी के रूप में कवियों की इष्टदेव बन गई। इसी ब्रहमवेवर्तपुराण में आगे कहा गया है–

वाग्धिष्ठातृ या देवी शास्त्रज्ञानप्रदा सदा।
कृष्ण कंठोद्भवा सा च या च देवी सरस्वती।

अर्थात् वाक् (वाणी) की अधिष्ठात्री यह देवी सदा समस्त शास्त्रों का ज्ञान प्रदान करने वाली है। सर्वेश्वर श्रीकृष्ण के कंठ से प्रकट हुई यह देवी ही सरस्वती है। इन पौराणिक कथनों से यह स्पष्ट है कि भगवान के श्रीकंठ अथवा श्रीमुख से उत्पन्न शक्ति को वाग्देवी अर्थात् वाणी की अधिष्ठात्री कहा गया है।

मान्यता है कि वागीश्वरी मौनव्रत से प्रसन्न होती है। इसका अभिप्राय यह है कि कभी–कभी मौन व्रत करके वाणी पर संयम रखने का अभ्यास करना चाहिए। यह सदा ध्यान रहे कि आप जब भी बोले, सोच–समझ कर बोलें। क्योंकि मुख से निकले वचन वे तीर हैं, जो एक बार कमान (जिह्वा) से निकल गए तो फिर वापस नहीं हो पाते। आज वाणी ही हिंसा परिवार और समाज में शांति भंग कर रही है। अतः हमें वसंत पंचमी के दिन वाणी संयम के व्रत का संकल्प लेना चाहिए, तभी सरस्वती पूजा सार्थक सिद्ध होगी।

साभार–दैनिक जागरण
दिनांक 29 जनवरी, 2014

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com